मूल्य-पैंतीस रुपया
प्रथम संस्करण : 1985
आवरण : डॉ० प्रेमचन्द गोस्वामी
प्रकाशक : सुषमा-प्रकाशन,
नत्थूसर गेट के बाहर, बीकानेर 334 001
मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स, बीकानेर
SAWAN-FAGAN (Rajasthani Poetry)
Laxmi Naryan Ranga

मायड़ भोम, माँ अर मायड भाषा–भाव, रस अर चिन्तण री तिरवेणी । आ तिरवेणी जद मन, बुद्धि अर रसना रै कवळा-चीकणा मरुथळां रै कण-कण नै रस, रंग, रूप सू तरातर सींच'र सै सीवा-काकड़ा लाघ ऐकमेक हुय बेवै तद "सावण-फागण" रो ससार रचीजै रसीजै-रगीजै, तद शिल्प अर कथ्य रै अभीण मोटया चौक पूरीजै-सोनथाळ बाजै-केसर-कू कूं बरसै कस्तूरी महकै........

–रंगा

प्रकाशकीय

आप कोई पोथी पढो अर पढते पढ़ते आप लिलार सूं बाथेडो माडण री धारो, उणनें घणें हेज सू अन्तस रैं नैंडो सहेजणो चावो, एक हलचल माचैं आपरे पाठक, समीक्षक अर रचनाकार रैं न्यारे न्यारे स्तरां पर तो उण पोथी रो जनम सारथक बजे ।

आज रैं इण हवाई समैं मे मची थकी भागमभाग में भी आदमी टेम काढ'र जे 'सावण-फागण' जैंडी रगी चंगी व्यग्य-विचार री कोई पोथी पढणी चावें है–इण सोच विचार पाण पोथी प्रकाशन रो मत्तो करचो, पोथी रो मनोरथ सर्‌यो ।

कविता कोरमकोर नीं मनोरजन है नीं प्रयोग नाम धारी कोई चमत्कारी चौळको–ना फैशन ना हॉबी ना 'शो मेन शिप'—कवि श्री लक्ष्मीनारायण रंगा खातर कविता है एक संवाद, मिनख सूं मिनख ताईं एक सवादी सवेदना–आतम चेतना ।

भेळा बैंठर कवा को गिणीजैंनी । पण स्वाद आप आपरो न्यारो । गीता, गजला, नान्ही कवितावा (बीजिकावा) चितरामा अर व्यग्य विचार सैंपूर कवितावा, काणिया अर नाटकां रा कलमधणी श्री रगाजी अर उणारैं पाठकां रैं बीच में पड़ैं पण कुण ?

'सावण-फागण' पोथी रा चार चरण । गजल खड रा पारखी है डॉ० मदन केवलिया । बीजिका रा ओकारथी । चितराम रा डॉ० प्रेमचंद गोस्वामी अर कविता रा डॉ० नरेन्द्र भानावत । चार पारखी–एक कवि । असंख्य अनाम पाठक ! ठंडी, लिजलिजी अर बंसके पडियोडी सी 'यथास्थिति' री भाटा-बरफ मंजें पीघलैं–आ मंसा है ।

आस–उमीद है, राजस्थानी जगत इण पोथी नैं हेता हेजा अपणास देसी—

—सुषमा प्रकाशन

झरोखो

परख

जुगबोध गज़ळां

श्री लक्ष्मीनारायण रंगा राजस्थानी रा घणा चावा साहित्यकार है। उणा जीवत अर जगत नैं खुली दीठ सूं सँपूर सचेत संवेदना समेत सहेजी है, सबद-सबद निरखी-परखी है। जीवण री पाणी उतरथां फेर बचै कंई। गज़लकार श्रीरंगा री एक बानगी–

उतर रियो हर चीज री पाणी
काई नी बची अब ओळखाणी

मिनख री ओळखाण री तलास गज़ल दर गज़ल श्री रंगा करी है– 'सावण फागण' काव्य संग्रह में। जिनगाणी री संत्रास भोगै है– आज आखी जमारो

फैलरियो है जै'र अबै सांस-सांस में
पाळ्या पीवणा-सौंप क अबै कैवां कैनै ?

किणनै केवां पीड़ा ! ओ सारथक सवाल गजलकार री काव्य-मात्रा री तीख भरयो सुर है–

आदमी किसै रंगा मे रंग्यो हुयो है
ईसा तो अजै सूळी पै टंग्यो हुयो है

अन्तरिक्ष पोच र म्यान गरीबीजियोड़ै, इण जुग पर किसोक गैरो व्यंग्य है–

काळीदास हर जुग मे लेता रैया जलम
धरती-डाळ एटम सू काटै है आदमी।

परख

गज़लकार श्री रंगा कनै आपरी निजोनिजी पीड़ सिरजी' गजलां में आदमी री असल टीस, घणै उफाण सूं उभरी है–

बीती आखी ऊमर तनै याद करतां करतां
धुंधळागी निजरां थारी उडीक करता करता।

कवि आदमी। आदमी री ओळयूं अर ओळ ! जुगांजुग सूं बौ–एक अणंत उडीक लिया हिवड़ै रै हेत नै पाळै !

अंग्रेज कवि 'कॉलरिज' सटीक कैयग्यो है क' महान कवि महान दार्शनिक भी हुवै। म्हारो आलोच्य गजलकार महानता री दौड़ भाग सूं दूरो, पण इण असार संसार रो पूरो जाणकार है–

म्हे तो पाणी रा आखर हां मिट जास्यां
म्हे तो बाळू री लैरां हां, मिट जास्यां

पाणी रो आखर आदमो/नश्वर/बाळूरी लैरां रूप आदमी आज है काल नी। पण पांणी री टीम मांडणियो कवि मर मरनै अमर हुवै। श्री रगा आपरै कथ्य, आपरै सम्प्रेषण अर सवेदन रो एक साचो सर्जक है।

डॉ० मदन केवलिया

वेच्या हाथ बाजार कै अबै कंवां कैनै,
माथा किया नीलाम कै अबै कंवा कैनै.

फैल रियो है जै'र अबै सास-सांस मे,
पाळ्या पीवणां साप कै अबै कंवां कैनै

धोळा चोळा पैर लुकावै काळी देही,
बसै थठै किरकाट कै अबै कंवां कैनै.

मन घणो उदास तन सजियो-धजियो,
पौसाकी हुयो संसार कै अबै कंवा कैनै

वैचा धरम-ईमान कै वेचां देस नै,
घर बण्यो मसाण कै अबै कंवा कैनै.

कठपुतळ्या रो देस हुवै अठै खेल अजूबा,
दी डोर दूजां रै हाथ कै अबै कंवां कैनै.

फोडा घणी वात, कै ऊंचा भाषण देवां
उळझियोड़ा खुद आप कै अबै कंवा कैनै

मिन्दर मस्जिद भांग, जळावा गुरुद्वारा
जपां राम रौ नाम कै अबै केवा कैनै.

पोथ्या भणी इण भांत कै 'आपौ' भूल्या,
विगड्यो धाण रौ धाण कै अबै केवा कैनै

ऊचा घणा मकान, मिनख वावनियो हुयो,
गुण पोच्या पताळ कै अबै केवां कैनै.

म्है तो पाणी रा आगर हां मिट जासां
म्है तो वाळू री लैं'रा हां मिट जासां.

अकाम गरीबी री अगन सूं जळतो पानो
दुख-बादळ रा दशमन हां मिट जासां.

खेजडी री मागरी ज्यूं चुटै आ जिन्दगी
सांसां रा सूना मोता हां खिर जासां.

जीवण रै जंगळ भटकै तिरसा मिरगला
आसा-दरपण रा चैं'रा हां मिट जासां.

बिन रोटी रै तवै दाई जळ री जिन्दगी
भूखी भींता रा छापा हां मिट जासां.

लू रै लपरका दाई गुजर री आ जिन्दगी
सांसा-सतरंज रा मोहरां हां मिट जासां.

तीखा कांटा सूं बिंध्यो बाग रो रूं रूं
फूला रै मोई रा छाटा हा मिट जासा

जन-जीवण बण्यो राजनीति री चौपड़
वोटां बिकयोडी गोटयां हां मिट जासां.

□

समँ री चोट जिको सँवँ है आदमी
सही साची बात कँवँ है आदमी.

रिस्ता नाता सगळा काचँ काच री पडता
किसी जमी माथँ पग टिकावँ है आदमी

हरियाळी मंजळयां रा सपना लिया आंख्यां
पीळै पत्तँ रो जीवण वितावँ है आदमी

बिस्वास आस्थावा सँ तार तार हुयग्यां
कठै कठै कारचा लगावँ है आदमी.

पर्यावरण री सांसां रेडियोधर्मी घूड
ब्लडकैंसर रो जीवण जीवँ है आदमी.

सँ दिसावां पँ'री अन्ध्यारी पोसाकां
किण अकास पँ सूरज उगावँ है आदमी.

पारदर्शी भीता बो स्वारथ री रचँ
एक्यूरियम री जिन्दगी जीवँ है आदमी.

खिड़क्या रँ फ्रेमां हर आंख अठै है कैद
सही साचो रूप किया जाणँ है आदमी

सर्वाधिकार तो बेच्या सँ दूजां रँ हाथा
अनुग्रह री जिन्दगी बितावँ है आदमी.



बीती आखी ऊमर तनै याद करतां करतां
घुघळागी निजरां थारी उडीक करतां करतां.

हर बादळ रै साथै म्हैं बहाया आंसू इत्ता
सावण भी सूसग्या साथै आंसू भरतां भरता

तनै ढूंढणं रै खातर म्हैं किया सफर इत्ता
दिन–रात भी थक गया म्हारै साथ चलतां चलतां.

थारी याद री अगन में म्हैं जळायो मन इत्तो
चान्द–सूरज पडग्या फीका म्हारै साथ जळतां जळता

हर जिन्दगी में मिलणा ओ कवल हो थारो
क्यो हुयग्या जुदा थे म्हारै साथै चलतां चलता

जुगां जुगां सूं पैछाणै ए प्यार करणवाळा
क्यो हुयग्या अणजाण थे पैछाण करता करतां.

हर जीवण बणै प्यार प्रेम इत्तो सोरो कोनी
मुस्कल सू मिलै प्यार कैई बार मरता मरतां

हर पाव बणै मुकाम ओ जरूरी तो कोनी
मिलै प्यार री मंजल कैई जीवण चलतां चलतां.

बस इत्तै से ई दर्द सू यू तड़फ उठयो मन
ए प्यार रा है घाव, ए भरसी भरतां भरता.

थारी बदनामी रै डरसू न लियो नाम थारो
म्हारै होठां आयग्यो थारो नाम मरतां मरतां.

हर सास पर सदा म्हैं लियो है नाम थारो
म्हारै दम भी निकळसी थनै याद करता करता.



ओ दिन घणों अन्धेरो है
हर रोसणी पर पैरो है.

मंथण कर इमरत लाया
काळा नागां रो घेरो है

ऊंची मेड़ी ऊग्यो सूरज
गळयां रो भाग अन्धेरो है.

वसन्त मे पेड नागा–भूखा
ई जमी रो दुख गैरो है.

जमी-आकडा फसला ऊगै
खेत भूखां रो डेरो है.

मिनख गमादी सैं पेंछांण
मुखौटो ही अब चेरो है

हर अवाज बणगी चीखां
कान जमीन रो बहरो है.

गाव–गांव बस्त्या बळे
किण री ओ पगफेरो है.



आदमी कित्तै रंगां मे रग्यो हुयो है
ईसा तो अजै सूळी पे टंग्यो हुयो है.

चान्द मंगळ मार्थे बसणै री योजनावां
धरती मार्थै फैरुं मजहबी दंगो हुयो है.

अहिंसा री धरती पे ऐ ऐटमी फसलां
भारत रो गांधी फैरुं नागो हुयो है.

पर्यावरण नैं हाथां जैर पा रियां हां
हेमलॉक पीयर कद सुकरात चगो हुयो है.

सभ्यता-संस्कृति नैं सवारण रो दावो
आदमी है कै थोड़ो और बेढगो हुयो है.

ऊजळी खोळा पैर काळा अजगर घूमैं
जन-सेवा मांस रो धंधो हुयो है.

ग्यान री सीढियां चढ़ायो है जितो
आदमी बितो ई चितबंगो हुयो है.

धरती नैं सुरग बणाणै रा सुपना
प्रकृति रो आंचळ बदरंगो हुयो है.



चौफेर घिरी ऊंची दीवारां
कुण तोड़ै काळी मीनारां.

मगळै नागर काई छाई
काई हुयसी काकरी मारयां.

आदमखोर ओ जुग बण्यो
अठै मास रा सैं विणजारा.

सोने खातर बळै सीतावां
काई करै जनक दुखियारा.

मिनख जै'र रो बण्यो सौदागर
डरता फिरै साप बिचारा.

गूगी बस्ती है बोळा लोग
कुण सुणै दुख भरी पुकारां.

जीवता मिनख तो मरै भूखा
भोग लगावै देवता सारा.

मिनख सांप री पैं'री काचळी
नागा हुया सैं नाग बिचारा

□

दुख सूं गुजरी रात सारी
यूं ई बीतरी जिन्दगाणी.

धरती तिरसी रैई तरसती
कदै न बरसी बून्द पाणी.

चैन-चून्दड़ी कदै न ओढी
मूं पीड़ री हूं पटराणी.

मीठी मुळक रची ना होठा
आसू जीवण री सैनाणी.

कठै न मिल्यो सुख-सुआगत
फरै दुख मगळै मिजमानी

मन रो मैल सूनो सिसकै
सुख री हूं दुवागण राणी

दुख री जमी, जळण-अकास
जीवण कुळण है आ जाणी.

सुख सू रिस्ता नी निम्मा
दुख सू है पैछाण पुराणी.



हर किरण कर लियो अंधियारां सूं करार
अबै किण सूरज पर एतबार करां.

हर कलम ई विकगी अदै [illegible]
अबै किण कलाम पर [illegible]

हर धरम बणग्यो राजनीति अठै
अबै किण मसीहा पर एतबार करां.

हर रिस्ता थामी [illegible]
अबै किण दोस्तों [illegible]

हर भीत री नीव खड़ी है थोद [illegible]
अबै किण छत पर एतबार [illegible]

हर पग [illegible]
अबै [illegible]

सै जीभां पे लागी [illegible]
अबै किण अवाज पर [illegible]

हर [illegible]
[illegible]

किता रंग अर रूप बदळै है आदमी
किरकाट नै भी लारै छोडै है आदमी.

ले राजघाट री सोगन, सान्तिबन में संकळप
सघै जे स्वारथ दळ बदळै है आदमी.

असलियत कांई नी बस पडत ई पडत
कादां री फसला निजर आवै है आदमी.

सत्ता पावण नै तो घणां लट्टूरिया करै
मिल जावै वोट, चोट मारै है आदमी.

काळीदास हर जुग लेता रैया है जलम
धरती-डाळ एटम सू काटै है आदमी

ईस्वर अेक धरती ई, सूपी ही मां सी
टुकड़े पे टुकड़ा उणनै बाटै है आदमी.



अकास धुंधळायोडो है
आदमी उफतायोड़ो है.

भागै सगळी ओळखाण
आदमी सतायोडो है.

मूंढ़ै माथै मुळक रची है
आसूंड़ा लुकायोड़ो है.

बिम्ब सैं बिखर रिया
दरपण तिड़कायोड़ो है.

गुलाब बिस कांटा बणै
आदमी रो लगायोडो है.

सुख रो सूरज तड़फड़ावै
सूळी पर चढायोडो है.

मन रा ताळा ना खुलै
कूंची गुमायोड़ो है.

होठां माथै खीरा उछळै
पेट रो भड़कायोडो है.



उत्तर रियो हर चीज रो पाणी
काई न वची अब ओळखाणी.

कोयला सँग मकराणा वणग्या
काळै-धोळै री नी पैछाणी.

ऊंचां मै'ला लहै सिंघासण
करै जनता री कुण निगराणी.

सै निजारा दिखै धूंधळा
आख्या चांदी पाट्या-ताणी.

मिलै न्याव नै फांसी हुकम
कलम इन्याव चालै तूफाणी.

आंधो इतिहास साहित्य गूंगो
बोळै जुगरी आ सैनाणी.

होठा ठुकी सोने री मेखा
कुण कै'वै दुखां री काणी.

जिका बिकग्या बजारां बिचाळै
बोल सकै कठै वा मे पाणी.



वसुधैव कुटुम्बकम पण कोई नी आपांरो
धरती रा हा जाया पण घर नी आपारो.

अवै सुतन्तर हां आपां ओ स्वराज आपांरो
पण हर तन्त्र पर सूं उठग्यो पतियारो

अहिंसा परमो धर्मः ओ सिद्धान्त आपारो
आग, डकैतो, हत्या, बलात्कार रो निजारो.

हाथां रंगीन टी. वी. आंख्यां उपग्रह प्यारो
भूख री अगन में जळै आदमी बिचारो

अे न्याय रा तराजू, आयोगा री रपटां
भ्रष्ट चक्रव्यू रो नी टूटग्यो किनारो.

बहलासी कद ताई, ओ चान्द रो खिलौणो
बिना दूध मरै, जद आख रो ई तारो.

अे सुस्त सुस्त भवरा, अे मरी मरी तितळयां
कद दिसा पासी ए बसन्त रो निजारो.

योजनावा पंचवर्षी, ओ बीस सूत्री नारो
उम्मीद में ही मरग्यो ओ जमानो बिचारो



अन्धारी नगरी में आंधा बसें है लोग
खुली आंख्यां लियां अठै सोवैं है लोग.

हाथा मे मसालां जत्था रा जत्था
दिन रा उजाळा गुम जावैं है लोग.

आवणिया दिनां रा ले मीठा सुपनां
बाजीगरां सूं सदा ठगीजैं है लोग.

जड़ांमूल खाणैं री, मनसा लियां मनां
मूंढै पे अपणायत दिखावैं है लोग.

ऊपर सूं रंगमैं'ल सी चमक-दमक लियां
मांय मांय तरेड़ा, सी पावैं है लोग.

मकड़ी रैं तन्तर मे जाळा ई जाळा
तन-मन सूं फंस्या, तड़फड़ावैं है लोग.



मिनख जूण
रोटी रोटी,
काळी-धोळी
गोटी गोटी.
आसू धार
मोटी मोटी.
दुख ढोवै
रोती रोती

चूकै करज
कोडी कोडी
बिकै मजूरी
बोटी बोटी
जीवण घाणी
जोती जोती
जीवै जिंदगी
छोटी छोटी

दुख जमीन
मोटी मोटी.
आसू बीज
बोती बोती.
कांटा फसलां
ढोती ढोती.
मूळ धन है
खोती खोती

मिनख नईं है
टोळी टोळी.
सांस बिकै
झोळी झोळी.
जिंदगी बस
खोळी खोळी.
कान बेच्यां
बोळी बोळी.



जिन्दगी नारेळ री ओटो बणी
गिरी गिरी देवतां रै भोग चढ़ी.

जिन्दगी तावड़े में भीत खड़ी
छांया छांयां सैं सिंघासणां पड़ी.

जिन्दगी काळजै री फालो बणी
मुळक मुळक पइसैं रै होठां चढ़ी.

जिन्दगी मरुथल मे छांट पड़ी
कूं कूं बिरखा दूजां रै आंगणै पड़ी.

जिन्दगी दुला री अणखिली कळी
सौरम सौरम ऊंचा मैलां चढ़ी.

जिन्दगी लीर लीर गूदड़ी बणी
गीद्या गीद्यां ऊंची खुरस्यां चढी.

जिन्दगी आसावां री लाम्बी लड़ी
मोती-माळा मालकां रै गळै पड़ी.

जिन्दगी रिगसती पगथळी बणी
मजळा मजळा सैं ताळा बन्द पड़ी.



मिनख बधतो जारियो है
मानखो घटतो जारियो है.

जित्तो ऊंचो चढै रुख ओ
जड़ा छोडतो जारियो है.

जित्ती तेज हुवै रोसण्या
अन्धारो पसरतो जारियो है

संडकां रै जंजाळ विचाळै
नगर उळझतो जारियो है

पै'रै मिनख घणी पौसाकां
नागो हुवतो जारियो है

इण अन्ध्यारै सहर माय
सुरज भटकतो जारियो है.

ऊंचा सुरां में गावै गीत
ओ रोवणो लुकारियो है

होठां मूं मैं सांधै रिस्ता
मन सूं टूटतो जारियो है

पगरै काई पडतां पडतां
सरोवर मडतो जारियो है.

फैलै चौफेर टीडी-फाको
ओ खेत खजतो जारियो है.

सुतन्तरता री दुकान सूं
नुई मांकळा घड़वा रियो है.

हथियारां री बिकरी खातर
देसां नै लड़वा रियो है.

□

राम राज मे तावड़ो ई छाँया है
अठै सब पड़सै री माया है.

भैंरूजी घणा मारै मजा
भोपा दुख सताया है.

साच चढ़ै सूळी माथै
झूठ रा राज सवाया है.

भाटा बोल देवै परचा
मिनख लगाम लगाया है.

सोने माथै काट चढ्यो
पीतळ झोळ चढाया है.

गंगाजळ सूं न्हावै गधा
आदम मरै तिसाया है.

बा'रै सू आजाद दिखा
ऊमर कैद भोगाया है.

आ नै माथै ऊच्या फिरां
खाडा बाही खुदाया है.

दास जनम्या दास मरिया
आजादी फळ चखाया है.



एक सांवठी छीड़ मांयली छिब

'बीजिका' नांव सटीक । कविता री अणिमास रो अहसास ! बीजिका-एक सबदबोध ! सबदाखंरा रै आरपार होवै कवि । प्रकृति री गति, स्थिति अर कृति-मति री सो ग्यान-उकरास जद बो 'शब्दाणु' विस्फोट सरूप करै तो आखर आखर अपार पण सरब सुलभ सहज सरजणा रो घणियाप धारै ।

इण कूंत पेटे मरुधर मोभी कवि श्री लक्ष्मीनारायण रंगा री बीजिकावां पासी निजराऊं तो मनै लागै क' अठै जावती कविता भीड़ सूं परबार हुयर इण जीवण–जगत री छिब, एक सांवठी छीड़ में उकेरै ।

एक ही शबद मे सो कंई । चार पाच री जोड़ अगाडी सबद हाकाबाज, हुंवता दीसै । की रंगा-रगत देखो बिन्दु मे सिन्धु रूप-जिन्दगी/खारे पाणी री भील/मौत/काचो काच/ईमान/किराए री होडिंग/पैछाण/स्टीकर जठै चावो चेपो/घरम/गैला बान्दरां रै हाथां चक्कू/दहेज/समझूणी री तेवड़ मे घासलेट रो डब्बो/महानगर/गैस प्रदूषण रा प्लान्ट/इज्जत/गळियोडी फीसती धोती/नौकरी/सांसां री अडाणगत/विधवा/बिना हत्थे री घट्टी/वासना/खाळियो/दिन/ईनाम बायरो लौटरी रो टिकट/जस/बरतण खुदियोडो नांव/हेत/राचणी मेहदी/भगवान/हवा कठै कोनी ।

परख

अणुवंती कविता खातर की कैणो न सुणणो । मायलो मरम–नान्ही कवितावां री भरयो तरयो जमारो । जे दो आखर री सांवट नी समळै तो पाठक ताई कविता याने भैंस ताई भागोत ।

श्री रगा कनै सबद-संगत है । सबदा रै इयै-भाइपै मे कवि री राजस्थानी काव्य यात्रा रो आयाम मनै उजासवंत लागै । 'सावण फागण'-काव्य संग्रह री आ बीजिकावां मे एक बीजिका हो जे लोक रै चित चढ़सी तो कवि कृतिधन्य हो जासी ।

....'समझूणी री तेवड़ मे घासलेट रो डब्बो'-दायजे री ओ पीड़ भरयो सम्बोधन-समाज-क्रान्ति रो महाकाव्य है ! आ लैण श्री रगा री ही कलम लिख सकै। आ ही सगती । ओ ही सरुप । आ ही जुग–टीस । कवि री यात्रा वधासी । ओ पतियारो है ।

जीवरा

तार मार्थं
झरूं-झरूं
बून्द.

मिरतू

झणकार करतो
टूटियोडो
तार

जीवरा-मिरतू

ट्यूब लाइट करै
''''जग बुझ
बुझ' जग
जग बुझ''
''' बुझ '''

बाळ मौत

आंगणें बरसी
नान्ही सी
छांट अर
सूखगी.

जवान मौत

खूब बधियोड़ी
गुड़का खावती
किन्नी,
तेज हवा सू
खूसगी
हाथा मांय सूं.

जीवण

जुगां सूं
अगन-तिरस
लुकायोड़ो
मरुथळ.

मौत
काचो
काच.

जिन्दगी
रीफिल '' ''

जिन्दगी
खारे पाणी री
झील.

फूट

जठै
सेरी हुयसी
पाणी
बठैई
मरसी.

कळह

तेज तावड़ै सूं
फाट जाय
आगणें री
सिरमट भी.

पाप

खाडो खुद
मैलं सूं भरं
दूजा पर भी
कादो उछाळं.

ईमान

किराये रो
होर्डिंग.

न्याव

सोने री
ताकड़ी.

पैछाण

स्टीकर
जठै चावो
चेपो.

शिक्षा

"बोल पट्टू
सीताराम".

आज रो ग्यान

परदेस्यां रै
मूंढा रा
ऐंठा
कथा.

धरम

गैला बान्दरां रै
हाथां
चक्कू.

दहेज
समठूणी री तेवड मे
घासलेट रो
डब्बो.

नुई संस्कृति
तुलसी थाणै में
थोर उगावणों.

परम्परावां
रैंपर,रैंपर
रैंपर
किताब
कठेई नई.

महानगर

गैस-प्रदूषण रा
-प्लांट.

सुरक्षा

आंगण ई
कुओ.

इज्जत

गळियोड़ी
फीसती
धोती.

प्रगति

एक सड़क
स्पीड ब्रेकर री.

विकास

स्टैन्ड माथै खड़ी
साईकल रा
पैंडल मारणां.

प्रतियोगिता परीक्षा

काच री
भीतां माथै
पंजा
जमावणां.

नौकरी
सांसां री
अडाणगत.

मिनख
आगी माथैं
चढ़ियोड़ो
बिना सेपटीवाल्व रो
प्रेसर कूकर

लुगाई
सो रस कस काढ़
घाण,
फैंकियोडी
चाय री पत्ती.

बिधवा

विना हथै री
घट्टी.

बुढापो

तळैटी मे
आथमतो
सूरज

जोबन

किरकट री
तुई दड़ी.

कुंठा

मोखी रो
डाटो.

टूटा रिस्ता

भीत सूं
उतरियोड़ा
लेवड़ा.

दुखी

सील खाई
भीत.

काम
बाळू री
लैरां मे
धधकती
अगनी.

वासना
खाळियो.

अहं
शीश मैं'ल मांय
बळती
मैणबत्ती

आबादी
कीड़ी नगरो.

दिन
इनाम बायरो
लाटरी रो
टिकट.

भगवान
हुवा कठै
कोनी ?

घरू रिस्ता

नगर मे
घर कम
होटल घणां.

पतियारो

घणां जतनां
सभाळयो
सिक्को
खोटो निकळ्यो.

करम फळ

आप रै
नखां रा
झरूंटिया.

यादां
कजळीजियोड़ा
खीरा.

जस
बरतण
खुदियोड़ो
नाम.

जवानी-बुढ़ापो
ढाळ चढ़णो
ढाळ उतरणो.

हेत

राचणी
मैंदी

प्रेम

बिरखा मे
निकळसो
तो
भीज सो

साच-झूठ

काया
अर
छाया.

पाप

सरीर माथै
तो
मैल चढसी.

सभ्यता

रै प र.

बांझड़ी

बिन मोती री
सीपी.

परिवेश

जे आंगण
काळो हुसी
पगथळयां
मैली हुसी.

सामाजिकता

दूजे घर रो
धुंओ
पीवणों पड़ै
आपां नै.

वातावरण

रेडियोधरमी
धूड़.

खोड़ीलो
सड़क रो
खाडो.

कपूत
कुठोड़
पचियो.

मिनख
हाड--मांस रो
चितराम.

कलम रो कमाल

रंगा री "सावण–फागण" पोथी में सबदां री भीणी-भांक अर भांकी रो दरसाव 'चितराम' खड में अखंड अर अभंग-रंगपूर !

चित्त दीठ चितराम चावै दीठ चावै चित्त कविता पढणियो नी, भणणियो–गुणणियो चावै रस पूर पाठक !

सावण में फागण–फागण मे सावण एकोएक । गेरियो अकाश/बादळी कड़ाव/पून री पिचकारयां रंग बरसै/धरती गणगोर/सावण मे सांतरी होळी मची/सावण-फागण–एकाएक चितराम !

'ताळतळाया मे तिड़कते आभै रो दरपण ।' 'बादळ' मे अकास रै जंगळ मे सावणी सेवण चरता सुसिया ! 'सूनो आकास'/मौसम रै मिजळै छोरै हवारै अतरणै सूं कोनी माडयो एक भी बादळी-आखर ! 'भड़'/ओ आभो है क किणी दुवागण री आख !

परख

'नान्ही छांटां री बिम्ब रूपक श्री रंगा री कलम रो कमाल देखो– "सिरमट रै आंगणे मांय ए काली मिरचां कुण बिखैरी चौफेर !"

सावणियो धोबी ! अकासी पीजरो ! अकासियो अखबार । गोरबन्द ! मूमळ री मेड़ी–अे खाली-माली कवितावां रा चितरामी सीरसक ही नी है अे है एक पूरा पाठा जीवता-जागता चितराम । बिरला में धरती-अकास अर आखी प्रकृति रा इसा रंगीला, रसीला, रूपाळा अर सास्कृतिक चितराम भारत अर विदेसां री दूजी भाषावां मे देखण नै नी मिलै । ओ रंगा जी रो, आपरी निजू रचाण-बखाण रो तरीको है । आ राजस्थानी भाषा नै उणां री अनूठी देन मानीजसी । पैली बार प्रकृति रा सोवणा-मोवण चितराम नुईं नकोर ढौंनी में रंगा जी री कलम सूं रचीज्या है–अे आपरी परम्परा थापसी-पतियारो है ।

डॉ० प्रेमचन्द गोस्वामी

सावण-फागण

रंग रमण रै
चाव सूं
गैरियो–अकास,
घोळ राख्या है
रंग–रंगीला
बादळी–कढ़ाव,

पून री पिचकारयां सूं
बौछारां री धारां सूं
रंग बरसै
धरती गणगोर पर, र

रंग री राणी
धरती धिराणी
उडा री है
सतरंगी गुलाल
चारूं पासी–क

सावण में
सांतरी होळी मची
रंग-रम रूप रची.

रंग- पंचमी

अकास
खेल रियो है–
फाग
धरती साथै,
बरसा रियो है
रस–रंग री बौछाड़,
उडा़रियो है
रंग रंगीली गुलाल–र
इण रंगपंचमी रै
कामण गारै
मौसम में
सरम डूबी
धरती
माथो झुकाया
भीजती जायरी है,
रंगीजती जायरी है
रसीजती जायरी है
पसीजती जायरी है.

बादळ

अकास रै
जंगळ माय
सावण री सेवण

चर्रारया है
नान्हां नान्हां
धोळा-धोळा
सुसिया-कै

पून रै खड़के सूं
अचाण-चक
कठीनं भाजग्या,
कठैई निजर नही आवै
दूर दू . र दू ...र
तक.

ताळ-तळायां

रात बीजळया
इसी कड़की-क

आभै री दरपण
तिड़कग्यो,
रात
बादळ
इसा गरज्या-कै

तिड़कोड़ै काच रा
टुकड़ा-टुकड़ा
किरचां-किरचां
बिखरगी
धरती माथै-

दिनूगै री
सोनल रोसणी मे
झल-मल, झल-मल
झल-मल.

सूनो अकास

अकास री पाटी
मायँ
मौसम रै मिजळै

छोरै -
हवा–रै बतरणै सूं
कोनी माण्ड्यो
एक भी
बादलो-आखर-र

पाटी पड़ी है
सफाचट.

साफ अकास

अकास
सावळ सरियां
झाड़ियो–पूंछियो
स्याम पट

जिण पर
कठैई,
कोई
चाक रो
निसाण तक
कोनी.

बादळ बरिणया चितराम

आ
अकास रै
ऊंचै हिमाळै माथै
आगै-आगै
जा री है
'सैणी' सुन्दरी
बरफ सी घुळती
अन्तस री आग सूं-
लारै लारै
उणनैं ढूंढतो
जारियो है-
'बीजो',
बिजोग रा गीत
गांवतो-
गळतो-पिघळतो.

बादळी-अकासियो

आ कुण
रंगभीनी-रसभीनी
मूमल,
महेन्द्र री
उडीक मे
संजो राख्यो है
बादळी-अकासियो-क
उण रै
सोनल-दिवळै रा
झपका-पळका पड़ै
सगळै अकास .

भड़

टप – टप–टप
टप – टप–टप
ओ
आभौ हे क
किणी दुवागण री
ओख ?

भड़

लागै - क
हुवावां करलियो
अपरण
बाळकियै-वादळ री
अर
आभौ-धरतं
वापडा
तरसै-झूरै
लगोलग.

नान्हीं नान्हीं छांटां

सिरमट रै
आगणं मांय
ए
काळी मिरचा
कुण बिखेरी
चौफेर.

पेड़ां माथै बूंदां

नानी मां री
काणी रा
मोत्यां रा रूंख
सांपडतेक

डाळ - डाळ
पत्ता— पत्ता
झळमळ-झळमळ करै
मोती.

सावणियो धोबी

सावणियो धोबी
बादळां रा गाभा धोयर
अणनिचोया
टांग दिया
हवा रै तारां माथै-र
आला गाभा सूं
टपकरियो है पाणी
टप टप - टप टप
ट
प.

कळपती पत्यां

भायली–बादळी नैं
कळपती–रोंवती
देख 'र
बिरछ री पत्यां भी
रोवण लागगी,

बादळी तो
थक र थमगी,
पण पत्यां
आंसूंड़ा
ढळकांवती रैई
घणी ताळ तांई .

बिरखा री रात

बिरखा री
रात,
काजळ रै
कूंपळै मांय

दुवागण री
आंख रै
आसूं री
सजळ बून्द.

चौमासे री धरती

चौमासे री
धरती,

रंग रंगीली
चटाई .

बिरखा में मरूथळ

बणग्या
वाळू रा धोरा

सोने रा पाड़,

उण माथै
बरसै

मोती री बौछाड़,

नीचे
बवै—

चांदी री धारा .

बिरखा री पून

बिरखा री
ठंडी पून
जाणै

सोरै मन सूं
निकळियोड़ी
आसीस.

हरी घास पर बून्दां

इण
हरिये सुवटिये री
पाखां
हीरा सजी,
चूंच
मोतीड़ा भरी.

अकासी–पींजरो

अकास रै
पींजरै मांय,
पून
कैद कर दिया–
रंग रंगीला
वादळी–पंछीड़ा नै.

अकासियो अखबार

दूधिया
अकास मांयं
उडतै पंछीड़ा री
लाम्बी–ओछी
टेढी–मेढ़ी
कतारा.
जाणै
अखबार मांय
छपियोड़ी
नुई कविता.

अमर चूनड़ी

रंग रंगीलो
सावण
जाणै
        सुरंगी
        अमर चूनड़ी .

किरणाळ बादळी

पून
लगा री है
अंगूरिया ओढणी रै
चारूं पल्ला
झलार
चमचमावती.

सावणी धरती

सावणी
    धरती
        मंडियोड़ो
        चढियोड़ो
                सुरंगो रंग.

सावण

जावता बादळ

जा रियो है
होळै-होळै
ऊंटां रौ काफलो

घर मजल्या
घर कूंचा
अकास रै मरुथळ मांय.

बीजळयां

ओ
माझळ रात नै
बादळा री ओट
कुण करै–
वेल्डिंग, कै
उण रा
पळका-भपका
मूण नी दै ?

तेज छांटां

मोसम री
कुचमादण

छोरो,
फेरतो
फूल रा चमर
बादळां रै
सतै माथै-र
बून्दां री
सेन मान्यां
उठी-भिणकी.
भण-भण-भण-भण.

पाड़ा चैंवती पाणी

ममनाळू
मा री
हरी काचळी-कुडती
चीर'र

हांचळां सूं
चैंवती
दूध री धारावा.

फुंवार र तारा

मौसम महाराणी
घुमा री है
अस्सीकळी रो
घेर घुमेर
बादळी-घाघरो,

जिण रै
लूमते-झूमते
नाडे मे
जड़ियोड़ा
तारा-मोती,

कळी-कळी मे
टकियोड़ा
रंग-रंगीला काच
करै
जगमग-जगमग.

फुंवारां बिचाळै
पून रा लैरका

बादळियो बापू
पैप चलावै
पून मायड़
आंगण धोवै
भींतां-घर
डांगळो धोवै
सरडsss, सरड़sss
सरड़ssssss.

हरिया बूँठा

सावणो
रंगरस पियोड़ी
सोनल धरती
माथै

हरिया हरिया बूंठा
जाणै
हरी-हरी झाळयां बैठ्या
पाखंड़ळ्यां
फड़फड़ावता–
हरिया-हरिया
सुवटिया.

हरियाळी

अकाश-
सूरज री
सोनल-रूपल
कलम सूं-र
हरियाळी री
हरी स्याई सूं
कर दिया
धरती रै कोरै
कागज माथै
दसखत
ठौड़-ठौड़.

पाड़ा माथै बादळ

पाड़ा नै
लाग गी
लू–
जणंई
सावणी-राणी
समन्दर री
कटोरी मांय
भिजो-भिजोर
बादळी-रुई रा
फवां
उणरै मायै
लगावै-
उतारै

पाड़ा लूमता बादळ

बिजोगण
यक्षणी
भेज्यो
परेम-सनेसो
यक्ष नै,
जणै ई
बादळ
पाड़ा माथै
झुक-झुक आय
ढुळ-ढुळ जाय
बिजोगण रा
आंसूड़ा
वंदाय .

छांटा-छिड़को

आभै बैठी
        काली कळायण री
लालर ओढियोड़ी
        बूढकी बिरखा,
हवा रै हाथां
        छाणै
वादळी-चाळणी-र
        नान्हड़िया छणै
छण-छण, छण-छण,छण-छण.

काळी-कळायण

काळा गाभा
पैर'र
काळा केस
बिखेर-र
        आ कुण
        पसरी पड़ी है
        ऊंधै मूंढै
        कोप भवन में
        कैकैयी .

बौछाड़ां

अकास सू
लटक री है

बून्दा री
रंगरंगीली
बानरमाळ

आडी–टेढी
लड़ालूम
झड़ा–झूम.

फूल गुलाबी

सूरज री
किरणां–

खिलादै
जगा जगा
बादळा मे
गुलाब रा फूल'र
आभौ हुयजावै
फूल गुलाबी.

अेक और मेघदूत

चौमासे रो कालीदास
रचरियो है
अकास रै
ताड़-पत्तर माथै,

पून री कलम सूं
बादळी छन्दां मे
एक और "मेघदूत".

मलजी मोर बोले रै

ऊजळी चारणी री
आतमा री कुळण ..
घुळगी

मोरा रै मन में क—
पळपल
छिण-छिण
रटै-
मेहा आओऽऽऽऽ
मेहा आओऽऽऽऽ

रंग रंगीला बादळी

चितराम

ओ कुण
भोपो
अकास माथै
मांड राखी है
पाबूजी री फड़-अर

उण
रंग रंगीला चितरामा रा
जसगीत
गारियो है
पून री टेर में—
बीजळयां रा छमछमा'र
गरज री ढोल
वजा बजा'र.

घुळ र बणतो दूजो बादळ

अकास माय
पंख पसारया
उडतो जारियो है

अमर पछी,
अमर गीत गावतो—
जिकी
देखता-देखता ही
जळ-पिघळ जावै
सूरज री अगन सू-र

थोड़ी ताळ पछै
उण राख माय सूं
उडतो निजर आव
दूजो अमर पंछी.

गोरबन्द

ओ सुरंगो आभाँ है क–
इन्दर धनुस रै
सतरंगी साटण सूं
खारे समन्द री
        बादळी कोड्यां सूं
बीजळयां रै
        चिमकणा काचां सूं
किरणळ फुन्दां सूं
        लड़ालूम
—गोरबन्द !

छोटी-छोटी छांटा

बादळियो बाळक नैं
        जगावण सारू
रात मासी
        फैंक रयी है
पाणी रा छांटा
        रै रै रै !

लोर

इण अकास री
रध-रोही में
ओ कुण भरै
दाकळ ?
कुण वावै
पून री
पातळी
कामड़ी ?
क'
धोळी धोळी
भेड़ा भाजै
दड़बड ...... दड़बड़.

कस

गरमी
कित्ती आकरी है क'
अकास रै
गाभा माथै
जमग्या है
पसीने रा स्याळ.

भाजता बादळ

रंग रंगीली
बादळी-तितल्यां
उड री है-
अकास रै
बाग-बगीचा मांय-र
पूग री गैली
छोरी-
भाज री है
लारै-आगै
तितल्यां पकडन नै.

भांत-भांत रा बादळ

चौमासै
आपरी
असमाणी दुकान मांय
खोल नाख्या है
रंग रंगीला
जाळीदार
कपड़ां रा
थान रा थान.

नीं वरसै

दूरा
काईं ठा
काईं कै दियो-

बिरखा नैं-क
मूंडो सुजायोड़ी
बैठी है-
न मुमकै
न मुळकै .

मूसळाधार

बादळ बैंटी
बिरखा-गोरड़ी
चलावै
धारावां रा

मूसळ
धमै धमै
धरती री
ऊंखळी मांय .

धरती-अकास-वादळ

धरती र
अकास,
सीपी रा
दो पाट-
उणा रै
विचाळै
पळै
वादळी-मोती.

धोळो धोळो अकास

मौसम-महाराणी
करण नै
सावणी
सोळह सिणगार,

उठायो
अकास-दरपण
पण
राणीजी री
गरम गरम
हवाई-सांस सूं
जमगी
दरपण माथै
भाप.

सिंझ्या रा बादळ

सावण री
सोन चिड़कली
सरणाटा भरै.

सिंझ्या रै
अकास माथै-र
लारै-लारै
उणरी
सोनल पांखां
चिलकै
चमचम चमचम.

मूमल री मेड़ी

सावण री सरघळ
रंगां री
सागर
घोरां घोरां
लहरां लहरां,
चिमकै
सतरंगी किरणां, र
सरघळ बण जावै-
रगरंगीली,
काच जड़ियोड़ी-
मूमल री मेड़ी.

मिनखांचारै री वन्दना

श्री लक्ष्मीनारायण रंगा री कविता में तरै-तरै रा स्वाद अर अनुभव है। कवि रै अनुभव री दुनियां लांबी-चौडी है। बीमें टेढ़ा-मेढ़ा, वाकाचूका, चिकणा-चपटा, हळका-गैरा, खाटा-मीठा, हाऊ-भूंडा घणाई रंग, तेवर अर चितराम, मंडचोड़ा है। कवि री दीठ गैरी अर व्यापक है। वो व्यक्ति अर समाज, देस अर धरम, कुदरत अर बणावट पर आपरी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करै।

आज रो मिनख सरल अर सीधो कोनी, निरमल अर निरद्वन्द्व कोनी। वो आपरै अस्तित्व खातर लड़ै, बीजां रै अस्तित्व नै चुनौती देवै, संघर्ष करै। बीरो आपो उळझचोड़ो है, भांत-भांत रा तनाव अर दबाव सूं दब्योड़ो है, घुटन, निराशा अर कुंठा रो अंधारो बीनै निगळै, वो छटपटावै बीरो विराट रूप घिस-घिसार'र 'चिन' मात्र रै जावै। 'बेमीला रिस्ता', 'आतमा कलम रो सोता', 'परम्परावां', 'आज रो मिनख', 'अकासियो', 'आज रो घर', 'टू बी ऑर नॉट टू बी', 'कैक्टस अर हूं', 'लाइलाज दरद', 'शापितरक्तबीज', 'रंगमंच' आदि कवितावां मिनखाचार रै टोटै अर अमूझणै पण री साख भरै।

परख

पण कवि रो मूळ स्वर आपै री पैछाण रो स्वर है। बो परिवेसगत विकृति माथै चाबुकदाई वार करै नकाबपोस सो, मूंडा नै उघाड़ै। मिनखाचारै री वन्दना-मंडल करै। कवि रै 'प्रेम' री दूब हरी भरी है, बीमें मोटी रै बळिदान री गंध है। बिखरयोड़ा मिनखां रो 'जुडाव' है। 'अबोली बातां' करण रो चाव है, आंसू रै फूल पर मधरी मुळक है।

कवि प्रयोगधर्मी है। पारम्परिक उपमानां नै जिन्दगी रै यथार्थ सूं जोड़ै।

डॉ० नरेन्द्र भानावत

रंगमंच

बार बार
रंग-रूप बदळ र
वेस-भूसा पलट र
भेज दियो जाऊं
इयै रंगमंच पर,

जिण री
अणूती चमचमती रोसण्यां में
झिळमळ इन्दरजाळी अन्धारां में,
मीठी मस्तानी हंसी में
नसीली फुसफुसाटां सूं
डूब जाऊं चमगूंगो-र
भूल जाऊं-कै
हूं कुण हूं ?
मनैं किण पात्र रो काम करणो है ?
इण सोर सराबा-मांय
प्राम्पटर री अवाज भी दब जावै-र

आज भी
अणजाण अपणैं री
खड्यो हूं
इण रंगमंच पर अर
नाटक री गतै
नैयो मूं
गुमसी रात री है ,

आत्मा

हूं
जुगां रै किनारां
बीचाळै बैवती
बैवती नदी हूं
सूरज
म्हारै
किरणां रै डोरां सूं,

इन्दरधनुस री कांचळी'र
सावणी घटावां रो घाटणो लहंगो
सी-'र
फुवारां री झीणी चूंदड़ी पर,

बीजळ्यां री कनार लगावै,
मनै
तारां
नगजड़िया कनफूल'र
चान्दो
चन्दरहार
पैरावै,

बसन्त
म्हारी चोटी सिणगारै
'र
उषा रो कूं कूं म्हारी
मांग भरै,

अर
मिला री मळाई
म्हारै काजळ आंजै
र
नुई बीनणी सी
सजी धजी
हूं

सदा सुआगण
म्हारै लैरां रै होठां सूं
विजोग रा गीत गाऊं
र ,

आख्यां सूं
अणबिध्या मोती
टपकाती रेवूं
र

सदा सागर सूं
सदा मिलण रै सारू
जुगां जुगां सूं

बैठी रैई हूं
र
बैठी रैवूं.

जिन्दगाणी र मौत

दियासळाई
जगी
बुझगी,
पलकां
उठी–झपकगी,
हथेळ्यां
मिली–
जुदा हुगी,

बरफ री किरचा
उछळी–
घुळ र पाणी हुगी,
दो पंछी
उड्या–
अळगा हुग्या,
परछाई
बणी–
मिटगी

तार
टकराया–
दूर हुग्या,
बाळू री लकीर
बणी, ढैयगी,
ओस री बून्द
बरसी–
सूखगी,
पगां रा निसाण
मंड्या–
मिटग्या

पसीनो आयो–
किन्नी,
उड़ी, फटगी
चिणगारी
चमकी–बुझगी.

अकासियो

अन्धारै रै खम्भै
टंग्यो है
अकासियो,

रात रै जं'र नै
पीवै है
अकासियो,

मयूर्ख री घुटण
घुटै है
अकासियो

आन्धी री पीड़ पी
मुळकै है
अकासियो,

रात भर ओसलो
चळै है
अकासियो,

दूजां रै सागर
जगै है
अकासियो

अधिकारां माथै
उजाळै री जं
प्रगटै है
अकासियो,

म्हारै मन मांय
मंचळता है
अकासियो

कलम रौ सातो

कलम री कुळण
काणो,
कलम रा आसू
कविता,
कलम री घुटण
साहित्य,
कलम री जळण
कला,
कलम री चिन्ता
दरसण,
कलम रो लोई
इतियास,
कलम री जुबान
भासा.

आज रो मिनख

हर आख	हर तन
!	–
हर चैरो	हर मन
?	{ [( )] }
हर होठ	हर पग
( )	।
हर कान	हर सुख
;	@
हर हाथ	हर दुख
÷	+
हर साथ	मिनख बस
%	चिन्न ई चिन्न.

बेमोला रिस्ता

लाग जावै
जणै
ऊंजळ दातां में
कोई काळो कीड़ो-

तो मसूड़ा माय गैराई सूं गडियोड़ा
दांत भी
हिल जावै-
जड़णं सूं.

होळै होळै
दाड़ां-दान्त
सडन लागै
झरण लागै,

बिगड जावै मूढै रो स्वाद
समाजावै सांसां मे बास
पण
मोह आन्धो मन,

इण सडियोड़ा दातां नै
आप रै हाथा
उखाड़ फैंकण रो,
निकलवावणै रो
करै नही सा'स-र

जडा छोडियोड़ा दांत
सूतां-जागता
खावतां-पीवतां
हंसता-बोलता
दे'ता रै
एक तीखो दरद
एक गैरी टीस-कै
आदमी छटपटावतो रै.

जुड़ाव

जणै
किणी आंख रा आंसू
म्हारी
आखड़्या माय
घुळ जावै,

जणै
कंई हिरदै रो दरद
म्हारै
काळजे री कुळण
बण जावै,

जणै
कंई री हार
म्हारै
जिनगाणी रै पगा नै
थका देवै,

जणै
कंई रो भार
म्हारै
मन रो भार
बण जावै-

जणै
किणी रै मन रो सुख
म्हारै
होठां री मैंन्दिया, मुळक
रच जावै-,

तो हुवै पतियारो-कै
अजै ताई
मिनख-मिनख सू
पूरी तरिया कोनी टूटयो,

कठैई न कठैई
गैराई मे जुड़ियोडो है .

परम्परावां

जूनी अंध्यारी
सकड़ी संकड़ी
कोटड्यां मांय
कैद,

आपां सगळा
सूत्यां हां
मैली बासती सीरखां सूं
मूंडा ढक 'र,

जिणमें आपां
पुराणी सांसां नै
फेरूं पीवां 'र
छोड़ दां,
फेरूं लेवा 'र
पाछी छोड दां,

कुण जाणै कद
आपां
ए सीरखा-कोटड्यां सूं
मुगती पामां ?
कद ताईं
ओ जैरीलो
चक्कर चालसी ?
कद हुयसी
दिनुगो ?

आज रो घर

आगण
उफतियोड़ो,
कमरा
अमूजियोड़ा,

साळ–बरसाळी
राड सुळगायोड़ी,
बैठक
मूंढो सूजायोड़ो,

रसोई
सुळगती,
पइन्डो
भभका मारतो

मिन्दर
चिल्लाड़ा मारतो
मेड़ी
माथो पीटती,

भीता
भौ खायोड़ी
बांडा-बारणा
डरपीजियोड़ा

माळा–अलमारया
लुळता
जाळी–झरोखा
झुरता,

नाळा—परनाळा
तिस्सा
छता
आसूं टपकावती,

छता-दुछता
मुंढा सियोड़ा.
भंवरा-तहखाना
आंसू पियोड़ा,

घोरी मोड़ी
बन्द
डागळो
माथो झुकायोड़ो,

भरतण—बरतण
खड़कता
सीरख—पथरणां
झगड़ता,

अगाड़ी-पछाड़ी
सम्बन्ध तोड़ियोड़ा
अड़ोस-पड़ोस
मूंडो फेरियोड़ा,

गळी
मेण मुस्कली
—चौक
चोफाळिया,

अै है घर रा हाल
आ है जमाने री चाल !

कैक्टस र हूँ

मौ कंवे
"घणो अपसुगणो हुवै
घर में थोर उगाणो."

परम्परावां'र आधुनिकता रो
वरणसंकर - हूँ
कैक्टस सनै सड्यो सोचू-
'क इणनै बार फंकू' क नही ?
क कैक्टस ताना देवतो मुळक'र
जुगां सूं कांटा सियोड़ी,-
जुबान खोली-

"म्हारा काटा
इत्ता जैरीला कोनी
जित्ता थाणी
रूढयां र परम्परावां रा,

म्हारा पंजा
इत्ता जानलेवणिया तो कोनी
जित्ता थारी अनुसन्धाणा रा

हूँ इत्तो
सरव नासी तो कोनी
जित्तो थांरो सम्य जुग रा जुद्ध,

म्हारै हिरदै मे
घिरणा-वैर-हिसा रो
को जैर तो को वैवे नी

जिको
दूर सर्म यारी रगां में
वैवे सून वण र,

मनै लाग्यो
चांद मंगळ री ऊंचाया पर,-
उडण वाळे
पताळ री गैरायां नापण वाळो

इता धरमां
इता सिद्धान्ता
इता अनुसंधानां र

इत्ती सदियां' रै
पसोयिया सूं
सभ्यता रै सिखर पर चढियोड़ो

हूं मिनख
इण काटेदार
कैक्टस रै मांमै
एक बायनियो हूं."

टू बी श्रौर नोट टू बी

परिवेश
एक लारा
सूनी आंग
उणमे चिमकै
काळी किरणां वाळो
एटमी सूरज.

धरती
छिजती-पिघळती
पोपी-पतळी
बरफ री पड़त,
जिण माथै
हाथां मे लीली छुरयां–
तलवारां लियां
काटती-भाजती
गैली लूवां
चकरीवम हुयरी है,

वातावरण
धुखतो-दमघोटूं
मसाण,
जिण माथै छायोड़ी है
रेडियोधरमी कळायण,
चौफैर
मृत्यु रा सरणाटा
बम्बां रा धमीड़ा
झाझा री गरजां-र
लेसर किरणा रा पळका,

हर जगा
दारू रो धुवो
आग'र लोई रो समन्दर,
हर मूंढ़ै
मौत री धोखा-'र
मानवं री हार रो कळमस,

इण रै बिचाळै खड़्यो
सतुरमुरगी धरमी
बावनियो अरजण-हूं
सोचू-कै
टू बी और नोट टू बी

सरजण रो मोल

सीपियां रै मोत्यां रो
मोल तो
कूंत्यो गयो
पण कुण कूंत्यो
दुखड़ो
आं बापड़ी सीप्यां रो ?

लाइलाज दरद

[एक चिट्ठी–जिकी हर हाथ री–हर घर री है]

घर सूं आई है चिट्ठी कै
डाइबिटिक बापू रो
किणी तरियां भरै नहीं है घाव कै
सूया भी असर करै नहीं–
(क्योंक खरीदण नैं पईसा कोनी)

आख्यां हुवती जावै कमजोर
चिट्ठो भी लिखी-पढ़ी जावै नहीं,
बिन पेन्सन वाळी सेवा छूटणै रै बाद
मिळी प्रोविडेन्ट फन्ड री रासि सूं
इण अपाहिज हालत मे
जीवण री गाडी गुड़कावण नैं ई
खोली ही दुकान
उणरो सगळो समान
उठग्यो उधार,
कोई भी चुकावण री हालत मे कोनी
र बिना समान री बा दुकान
अब हुयगी बन्द—
र चूल्हो वाळण नैं भी कोई
देवै नही दियासळाई उधार,
सो ध्यान रंवै
आगै समचार है कै
मां रै गोडा रो बरसा बूढो ट्यूमर
उणनै–उठण कोनी देवै.
सगळा केवै कै
बिना इलाज
मा हुयजासी लूली–पागळी ....।
ध्यान सूं वाचीजै
कंवारी बैन वढती जायरी है ताड सी–
र दहेज री माग वधती जायरी है
काळ में वधतां मोल ज्यूं
लोग कैवै मूढामूढ कै

ए सावँ भी
आ छोरी रँ जासी कंवारी-
आ भाग जासी किणी लुच्चे लफंगे रँ लारँ
या कर लेसी कुवा-खाड.
एक समंचार ओरूं
छोटोडो भाई हुवतो जा रियो है
आवारा गर्द कँ स्कूल जावँ नई".
चिठ्ठी पढ र मनँ लागँ
जाणँ म्हारँ मन री गेराई में
कोई तीखी आरी
चीरती चलीगी-मनँ.
फेरू वखत री निरदयी बाथा मे
हूं हवालँ कर दूं खुद नँ
पख नुचियोड़ लोहू लहाण पंछी समान-
क्योंक
पिताजी रँ गैंगरीन रो घाव तो
एक लाम्बँ समँ सू
रिस रियो है मवाद-म्हारँ मन में.
मां रँ गोडां रो दरद
लाग चूक्यो है
म्हारी जवानी रँ पगां मे,
वँन रँ वदन री वधती चांदसी,
छा चुकी है सफेदी बण'र
म्हारे माथँ, मूंछ र सरीर पर,
भाई री आवारागर्दी
घुळ री है रग रग मे
रगत कँसर सरूप
वढते करज, मैंगाई र दहेज रो दरद
चटख रियो है
म्हारी रीढ री हड्डी मे-जिको एक्सरँ री पकड मे भी
कोनी आवे
हूं एक लाम्बी-ठंढी सांस छोड़ र हुयजाऊँ चुप
कँ
ए सगळा दरद ला-इलाज है.

बिरखा राणी

नीलग्पखी बादळ्यां री
मंहगो लहरानी
इन्दर धनुम री
रग सुरंगी कांचळी कसाती
झीणी झीणी फूवारां में
चूनड़ी उडाती
            बीजळियां रैं होठां
            मीठा गीतलड़ा गुजाती
            सावण–
            लोर ऊचाती
            फागण–
            चंग बजाती
मादळ बादळिया हुलरांनी
तेजे री तान उठाती
आकामी गगालहरांती
सावन–रगी
फागण रचंगी
            रग जमानी, मदमाती–
            आ कामणगारी
            बिरखा बीनणी.

भरम

सपनां रा मिरगला
भरता रैया
कुळाचा
रात भर
बाळू री लैरां नैं
पाणी समझर,
पण
तोड़ नाख्यो
उणा रो दम
दिनूगै री
किरणा री लैरां.

बिजोग

बीत रई है
जिन्दगी
उणी भांत
जियां
मांझळ रात नैं
आलणैं सूं
पछीड़ो,
भटक्योड़ो
डाफा मारतो फिरै
अंध्यारी रात में.

सपनां रा घरकोलिया

सामलै
चौगान मांय
टाबरिया
बणावै
माटी रा घरकोलिया,
पण
कोई काळा
कठोर पग
भांग जावै
आ घरकोलिया नै-
तो
मनै लागै–क
जाणे
इणी तरियां
कोई अणदेख्या पग
माटी मे मिला जावै
म्हारै सपनां रै घरकोलिया नै.
र हूं
डब-डब नैणां सूं
तिड़क्योड़ी माटी सूं
मुठ्या भरतोई रह जाऊं !

शापित रक्तबीज

म्हे
स्टेनलेस स्टील जुग रा हाँ,
म्हारां गुण निराळा है-
म्हे नित
चमकता-चिलकता दिसां,
इण चमक लारै
हर काळै-धोळै नै
लुकालां,
म्हे
इसा चीकणा-तिसळणां हाँ कै
दाग कै छांट
म्हा पर टिक ई नी सकै,
म्हे
हर कळक-मूंड नै
संकर भगवान दांई
मुळकता-हसता
लोक हित मे
पी जावां.

म्हे स्टेनलैस
प्रेसर कूकर दाई हाँ-
जिण माय
सो कंई पच जावै
लकड़-पत्थर सैं
हजम.
म्हारी भूख इसी कै
देखता देखता
बडा-लोठां पुळ डकार जावा
लाम्बी-मोटी सड़का गिटक जावां

डीगा डम्बर भवन निगळ जावां
बड़ी–मोटी योजनावां जीम जावां
देश–सीमावां नै बेच खावां,

म्हारी
तिरम इसी कै
संसद–संविधान नै,
न्याव–धरम नै
प्रान्त–राजा नै
आंख्यां मींच
अणछाण्यै पाणी दांई पी जावां-
म्हानै
मिल्यो है इसो बरदान कै
जिण माथै म्हे हाथ राख दां
बो ही स्वाहा-
गेहूं–चीणी स्वाहा
घासलेट–पेट्रोल स्वाहा
सिमन्ट–लोहो स्वाहा
राज–राजनीति स्वाहा
भासा–साहित्य स्वाहा
कळा–ब्योपार स्वाहा
सभ्यता–संस्कृति स्वाहा
नीति–नैतिकता स्वाहा
मिनख–मानखो स्वाहा
स्वाहा.

म्हे
इसा चमत्कारी बिधाता हां कै
काळै नै धोळो
गधै नै घोड़ो
अभिनेता नै नेता
पापी नै धरमी
अग्यानी नै ग्यानी
बणावणो
म्हारै डावै हाथ रो खेल है

म्है
चुटकी बजा'र
टाटवाळं नै खादी
भगवां नै धोळा
हरा नै लाल
गाभा बदळवा दां–
चावां जणै
भला भला नै
नागा करदां

म्है
अंगूठा दाभ नै
महाकवि काळिदास अर
महारिसी वाल्मीकि नै
महामूरखानन्द बणा नाखां
म्है
हत्या नै आत्महत्या
आत्महत्या नै खून.
धरम नै सम्प्रदाय
दंगै नै धंधो
जाति नै पाति,
रोट नै बोट
बोट नै नोट बणा दां

म्है
इसा नियामक हां कै
बोलदां बो कानून है
करदां बो कायदो है
म्है चावां उणानै
नचा नाखां
नाकां चिणां चबा नाखां,
म्है हां रक्त बीज !
जठै म्हांरै थूक री लाळ पड़ जाय
काळा बजारी–तस्करी

चोरी, डकैती, हत्या
अन्याय-अत्याचार
नुवां नुवां रक्तबीज जीवणधा
दिन दूणा रात चोगणा
बधता जासां कै
म्हे इण देस नैं
रक्त बीज देस बणा'र ही दम लेवां

म्हे
स्टेनलैस जुग रा हां,
म्हारां गुण निराळा है,
पण
सराप एक भोगा हां कै
म्हारै मूंडै जड़ियोड़ा ताळा है.





नाम : लक्ष्मीनारायण रंगा

शिक्षा : एम. ए. हिन्दी

रंगमंच : लेखन–निर्देशन, मचन अर अभिनय रौ 25 वरसा रौ अनुभव/अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत ।

आकाशवाणी सन् 1960 सू हिन्दी अर राजस्थानी नाटका, कवितावा, कहाणिया अर वार्ताआ रौ लगातार प्रसारण ।

लेखन : हिन्दी अर राजस्थानी री 15 पोथ्या प्रकाशित/अखिल भारतीय स्तर री अर अन्य प्राता री पत्र-पत्रिकावा मे कवितावा अर एकाकियो रौ प्रकाशन । प्रान्तीय स्तर पर पुरस्कृत ।

संगठन : 1. बीकानेर युवक समारोह रौ आयोजन
2. बाल-नाट्य-समारोह रौ जयपुर में श्री गणेश ।

सांस्कृतिक : 1. लोकसंगीत, लोकनृत्य अर नाटका माय विश्वविद्यालय युवक समारोह में प्रतिनिधित्व
2 अखिल भारतीय सास्कृतिक समारोहा मे भागीदारी
3. शिक्षा रै पाठ्यक्रम मे रचनावा संकलित